



महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन : वैचारिक प्रेरणाएं एवं रचनात्मक कार्य

विकास सिंह केमवाल

(शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री गुरु रामराय पी जी कॉलेज, देहरादून, उत्तराखंड, Email - vkemwal@gmail.com)

डॉ मेहरबान सिंह गुसाईं

(प्रो एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, श्री गुरु राम राय पी जी कॉलेज, देहरादून, उत्तराखंड)

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.23259915>

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 21-07-2026

Accepted: 20-08-2026

Published: 25-09-2026

Keywords:

महात्मा गांधी, सर्वोदय विचारधारा, सर्वोदय दर्शन, रचनात्मक कार्यक्रम, जॉन रस्किन, स्वतंत्रता आंदोलन

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र महात्मा गांधीजी के सर्वोदय दर्शन, विचारधारा के निर्माण की पृष्ठभूमि, दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में सत्याग्रह के प्रयोग, रचनात्मक कार्यों पर विश्लेषणात्मक दृष्टिपात करता है। गांधीजी का सर्वोदय दर्शन उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं नैतिक चिंतन का समग्र रूप है, सर्वोदय का मूल उद्देश्य प्रत्येक जन के कल्याण, समानता को सुनिश्चित करना था। साधारण एवं आत्मनिर्भर जीवन जीते हुए आम मनुष्य जाति, धर्म के भेदभाव से ऊपर उठकर आत्मसत्य से परिचित हो, ऐसा महात्मा गांधीजी सर्वोदय के जरिए चाहते थे। जॉन रस्किन की पुस्तक अनटु दिस लास्ट को गांधीजी के सर्वोदय संबंधी विचारों के विकास में महत्वपूर्ण प्रेरणास्त्रोत के रूप में देखा जाता है, उनके जीवन की तमाम महत्वपूर्ण घटनाओं, व्यक्तित्वों के गांधीजी पर प्रभाव एवं सर्वोदय दर्शन के विकास में उनकी भूमिका का विश्लेषण करने का प्रयास शोधपत्र में किया गया है। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के नस्लभेदी अनुभवों, सत्याग्रह के प्रयोग, फीनिक्स एवं टॉलस्टाय आश्रम आश्रम की स्थापना आदि कार्यों ने उनके सामाजिक एवं नैतिक चिंतन को व्यावहारिक आधार प्रदान किया, आगे चलकर भारत आगमन एवं भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधीजी के विचारों ने आंदोलन एवं समाज को अनेक नए आयामों से परिचित करवाया और स्वतंत्रता हेतु संघर्ष सामाजिक एवं नैतिक

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

उन्नयन के लिए लिए गए अनेक रचनात्मक कार्यों का भी उत्प्रेरक बना। निष्कर्षतः गांधीजी का सर्वोदय दर्शन न केवल राजनैतिक अपितु सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक आयामों को समाहित करने वाला एक व्यापक दर्शन है, जो समानता, बंधुत्व, आर्थिक स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता एवं नैतिक उत्थान के लक्ष्यों पर आधारित है। वर्तमान समय में बढ़ती आर्थिक असमानता भौतिकतावाद एवं हिंसा तथा युद्धों के संदर्भ में गांधीजी के सर्वोदय दर्शन की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता आंदोलन कई मायनों में देश के लिए महत्वपूर्ण था। स्वतंत्रता आंदोलन के समय ब्रिटिश सरकार एवं सरकारी तंत्र की ज्यादतियों का विरोध तो स्वतंत्रता सेनानी कर ही रहे थे, इसके साथ ही समाज सुधार, दलित उद्धार, शिक्षा आदि बिंदुओं पर भी समाज में जागृति फैलाने का कार्य कर रहे थे। बीसवीं सदी का भारत जहाँ एक ओर अंग्रेजों से संघर्ष, स्वतंत्रता और विकास की कहानी प्रदर्शित करता है, वहीं दूसरी ओर विभाजन, धार्मिक दंगों, अकाल एवं महामारी जैसी घटनाएँ भी प्रदर्शित करता है। उस समय ऐसे कई चिंतक हुए, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के साथ-साथ समाज में व्याप्त विभिन्न विषमताओं, कुरीतियों को हटाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। महात्मा गांधी इन्हीं चिंतकों में से एक थे।

महात्मा गांधी ने चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन आदि से अंग्रेजों की नीतियों, सरकारी तंत्र के प्रति विरोध प्रदर्शित किया। इसके साथ ही अस्पृश्यता निवारण, महिला उत्थान, सांप्रदायिक सद्भाव आदि विषयों पर भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गांधी जी के विचारों पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि उनके विचारों में देश की स्वतंत्रता के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग की उन्नति और कल्याण निहित था।

दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान गांधी जी ने जब जॉन रस्किन की पुस्तक 'Unto This Last' पढ़ी तो वे इस पुस्तक से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने इस पुस्तक का अनुवाद 'सर्वोदय' नाम से किया। इसके पश्चात भारत आगमन एवं स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने पर गांधी जी अनेक अन्य घटनाओं एवं विभिन्न लोगों से परिचित हुए। समाज के विभिन्न वर्गों के कल्याण संबंधी उनके विचारों का एक समग्र रूप उनके सर्वोदय दर्शन के रूप में प्राप्त होता है।

शोध के उद्देश्य

- महात्मा गांधीजी के सर्वोदय दर्शन संबंधी विचारों का अध्ययन करना।



- गांधीजी के जीवन के महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों एवं घटनाओं का उनके दर्शन पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
- गांधीजी के सर्वोदय दर्शन के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

शोध विषय की प्रस्तावना एवं इसके उद्देश्य से स्पष्ट है कि यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। महात्मा गांधी के सर्वोदय संबंधी विचारों के अध्ययन हेतु विभिन्न साहित्यिक स्रोतों, जिसमें प्राथमिक व द्वितीयक दोनों स्रोत सम्मिलित हैं, का उपयोग किया गया है। गांधी जी के जीवन की विभिन्न घटनाओं एवं सर्वोदय दर्शन के निर्माण में उनके प्रभाव का विश्लेषण करने हेतु गांधी जी की आत्मकथा, संपूर्ण गांधी वांग्मय का अध्ययन किया गया है। सर्वोदय दर्शन के अंतर्गत शामिल किए जा सकने वाले विभिन्न कार्यों के अध्ययन व विश्लेषण हेतु प्राथमिक स्रोतों यथा गांधी जी द्वारा लिखित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं द्वितीयक साहित्यिक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

महात्मा गांधी के सर्वोदय दर्शन के विकास में विभिन्न व्यक्तित्वों एवं घटनाओं की भूमिका

दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान एक बार जोहान्सबर्ग से नेटाल की रेल यात्रा के दौरान गांधी जी ने उनके मित्र पोलाक द्वारा दी हुई एक पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' पढ़ी। इस पुस्तक से गांधी जी अत्यंत प्रभावित हुए। गांधी जी मानते हैं कि जो विचार उनके भीतर थे, रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' ने गांधी जी को उनके उन्हीं विचारों का प्रतिबिंब दिखाया। गांधी जी ने इस पुस्तक को 'सर्वोदय' नाम से गुजराती भाषा में अनुवाद किया।

गांधी जी सर्वोदय के सिद्धांतों को तीन बिंदुओं के रूप में व्यक्त करते हैं :

- सबकी भलाई में हमारी भलाई निहित है।
- वकील और नाई दोनों के कार्य की कीमत एक सी होनी चाहिए क्योंकि आजीविका का सबको एक समान अधिकार है।
- सादा मेहनत मजदूरी का, किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय विचारधारा अहिंसात्मक प्रजातंत्र एवं राज्यविहीन समाज को केंद्र में रखती है। वह समाज जो अपने कर्तव्यों हेतु सरकार की ओर ताकने के बजाय स्वयं आत्मनिर्भर होकर कार्य करे, जो संसाधनों हेतु भी आत्मनिर्भर हो। गांधी जी सर्वोदय के जरिए सबके कल्याण, उत्थान, समानता एवं विकेन्द्रीकरण के माध्यम से एक आदर्श समाज रचना चाहते हैं, जिसमें अमीर-गरीब, छुआछूत, ऊँच-नीच, स्त्री-पुरुष का भेद न हो।

गांधी जी सर्वोदय के जरिए समाज के प्रत्येक नागरिक की आत्मिक शुद्धता भी चाहते थे, ताकि प्रत्येक व्यक्ति के मन से विकार खत्म हो सकें और वह आत्मविश्वासी बनकर एक उत्कृष्ट समाज का निर्माण करे। वे सर्वोदय के जरिए



ऐसे समाज की रचना का स्वप्न देखते थे जो **सर्वभूत हिताय** अर्थात् सभी के कल्याण का भाव रखता हो, जो समाज निर्बलतम प्राणी को भी साथ लेकर चलने में विश्वासी हो।

गांधी जी सर्वोदय संबंधी विचारों के विकास का सर्वप्रथम श्रेय जॉन रस्किन की पुस्तक 'अटू दिस लास्ट' को देते हैं। गांधी जी यह भी मानते हैं कि सर्वोदय संबंधी जो विचार 'अटू दिस लास्ट' पुस्तक पढ़ने के बाद उनके मन में जगे हैं, वे पहले से उनके भीतर विद्यमान हैं। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में व्यक्ति के जीवन में घटित अनेक घटनाओं व महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों का योगदान होता है। गांधी जी की जीवन यात्रा का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि उनके जीवन में भी कुछ ऐसे व्यक्तियों, पुस्तकों और महत्वपूर्ण घटनाओं का योगदान है जिन्होंने गांधी जी के व्यक्तित्व का निर्माण किया और सर्वोदय का बीज बोया।

गांधी जी के व्यक्तित्व पर उनकी **माता पुतलीबाई** एवं **पिता श्री करमचंद गांधी** का गहरा प्रभाव था। माता पुतलीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं जो कठोर उपवास रखती थीं और सदा धर्म के मार्ग का अनुसरण करती थीं। सहनशीलता रूपी गुण गांधी जी को उनकी माता से प्राप्त हुआ है। गांधी जी के पिता सत्यनिष्ठ एवं सभी धर्मों का आदर करने वाले व्यक्ति थे। वे विभिन्न धर्मों के अनुयायियों से धर्म पर चर्चा किया करते थे, जिनसे उनके भीतर सभी धर्मों के अच्छे तत्वों को ग्रहण करने का भाव आया। यही गुण महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व में भी परिलक्षित हुआ।

गांधी जी के परिवार की सेविका **रंभाधाय** गांधी जी को राम नाम के जप की शिक्षा देती थीं, जिससे बचपन में गांधी जी का डर कम होता था। अतः बचपन से ही निर्भयता के गुण का विकास करने में रंभाधाय की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

गांधी जी की पत्नी **कस्तूरबा गांधी जी** का भी गांधी जी के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। कस्तूरबा स्वतंत्रता प्रेमी महिला थीं जो सत्य के मार्ग पर अडिग रहती थीं। गांधी जी को निर्भयता, स्वतंत्रता के प्रति प्रेम की सीख कस्तूरबा जी से मिली।

ब्रिटेन से लौटने के बाद गांधी जी जब धर्म एवं सामाजिक प्रश्नों को लेकर चिंतित थे, तो उनकी भेंट **भाई रायचंद जी** से हुई। रायचंद जी से चर्चाओं के बाद गांधी जी को अपने शंकाओं के समाधान मिले। गांधी जी मानते हैं कि जिन व्यक्तियों का उन पर सबसे अधिक प्रभाव था, रायचंद जी भी उनमें से एक थे।

गांधी जी **गोपाल कृष्ण गोखले जी** के व्यक्तित्व से भी प्रभावित थे। गोखले जी को गांधी जी के राजनीतिक गुरु के रूप में जाना जाता है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों हेतु जब गांधी जी संघर्ष कर रहे थे, तब गोखले जी ने गांधी जी की प्रतिभा को पहचाना था और जब गांधी जी भारत आए, तब गोखले जी ने उन्हें पहले भारत भ्रमण की सलाह दी।

गांधी जी के व्यक्तित्व पर **बाल गंगाधर तिलक जी** का भी प्रभाव था। तिलक कट्टर राष्ट्रभक्त थे और विदेशी राज्य के प्रतिशोध की भावना उनके भीतर कूट-कूटकर भरी थी। गांधी जी ने यह गुण तिलक जी से ही ग्रहण किए हैं।

जॉन रस्किन की लेखनी का गांधी जी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी जी के अंतरमन में जो विचार बचपन से थे, रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' ने उन्हें एक नवीन रूप प्रदान किया और यही विचार सर्वोदय के रूप में प्रकट हुए। 'अंटू दिस लास्ट' का गांधी जी पर गहरा प्रभाव पड़ा और इस पुस्तक को पढ़ने के बाद गांधी जी के जीवन में कई रचनात्मक परिवर्तन आए।

गांधी जी के जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ भी घटित हुईं जिनका गांधी जी के जीवन पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। कुछ घटनाओं का जिक्र गांधी जी अपनी आत्मकथा में भी करते हैं।

बचपन में गांधी जी ने **राजा हरिश्चंद्र** पर आधारित नाटक देखा तथा **श्रवण कुमार** पर आधारित पठन सामग्री का अध्ययन किया। इनसे गांधी जी के व्यक्तित्व में सत्यवादिता एवं पितृभक्ति गुण मजबूत हुए।

हाई स्कूल के दौरान जब गांधी जी के विद्यालय में निरीक्षक आए और उन्होंने विद्यार्थियों को कुछ स्पेलिंग लिखने को दी, तो गांधी जी को गलत स्पेलिंग लिखता देखकर उनके शिक्षक ने चुपके से गांधी जी को वह स्पेलिंग सही करने को कहा। गांधी जी को डॉट खाना मंजूर था, किंतु झूठ के बल पर वह स्पेलिंग सही करना उन्हें मंजूर न था।

बचपन की एक घटना जब गांधी जी के विद्यालय के प्रधानाचार्य ने विद्यालय समय के बाद कसरत अनिवार्य की थी। एक दिन बादलों के कारण गांधी जी नियत समय के बाद कसरत हेतु पहुँचे, किंतु अगले दिन उनके शिक्षक द्वारा उन्हें गैर-हाजिर रहने का दंड सुनाया गया। गांधी जी ने सत्य कहा किंतु उन्हें फिर भी दंड भोगना पड़ा। इस घटना ने उन्हें सत्य के साथ रहने की प्रेरणा दी।

दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान जब गांधी जी डर्बन से प्रिटोरिया की रेल यात्रा कर रहे थे, तब साथी यात्रियों की शिकायत के बाद रेल अधिकारियों ने गांधी जी को प्रथम श्रेणी का टिकट लेने के बावजूद प्रथम श्रेणी से निकालकर तृतीय श्रेणी में बैठने को कहा। गांधी जी ने उनके इस आदेश को मानने से इनकार कर दिया। इस पर अधिकारियों ने गांधी जी को ट्रेन से नीचे उतार दिया। इस घटना से गांधी जी अत्यंत प्रभावित हुए और उन्होंने नस्लभेद भेदभाव के खिलाफ अपनी आवाज उठाना प्रारंभ किया। ऐसी ही घटनाओं से उन्हें समानता और अहिंसा संबंधी विचारों को फैलाने के लिए उत्साहित किया, जो सर्वोदय का आधार बने।

विभिन्न रचनात्मक कार्य

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका प्रवास से लेकर भारत की स्वतंत्रता एवं उसके बाद तक कई रचनात्मक कार्य किए, जिनसे समाज को बंधुत्व, समानता, छुआछूत खत्म करने की प्रेरणा मिली। गांधी जी आधुनिक भारत के इतिहास में न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी बल्कि समाज सुधारक, चिंतक के रूप में भी जाने जाते हैं। गांधी जी का सार्वजनिक जीवन वैसे



तो इंग्लैंड प्रवास से ही प्रारंभ होता है लेकिन इंग्लैंड प्रवास एवं तत्पश्चात भारत में आकर वकालत की प्रैक्टिस तक गांधी जी विभिन्न आयामों पर जाना र्जन करते रहे।

■ फीनिक्स आश्रम स्थापना

दक्षिण अफ्रीका प्रवास गांधी जी के लिए अनेक मायनों में खास था। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को अनेक बार नस्लभेदी विचारधारा का सामना करना पड़ा तथा यहाँ आए अन्य भारतीयों के संघर्षों को भी गांधी जी ने करीब से देखा। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी धीरे-धीरे अपने तथा भारतीय समाज के अधिकारों के लिए चेतना जगाते रहे। वे 'इंडियन ओपीनियन' नामक समाचार पत्र के माध्यम से नियमित तौर पर अपने विचार पाठकों के समक्ष रखते और किसी भी गैरकानूनी बात का विरोध करते थे।

लेकिन उनके साथी मिस्टर पोलाक द्वारा दी गई पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' को पढ़ने के पश्चात गांधी जी में बड़े बदलाव आए। वे पुस्तक से अत्यंत प्रभावित हुए और मुख्यतौर पर रचनात्मक कार्यों की शुरुआत उन्होंने यहीं से प्रारंभ की। इस समय तक 'इंडियन ओपीनियन' समाचार पत्र के संपादन की जिम्मेदारी भी गांधी जी पर थी। उन्होंने 'इंडियन ओपीनियन' से जुड़े कर्मियों के साथ एक संस्था बनाकर रहने का विचार किया जिससे जीवन यापन पर खर्च कम हो सके और वे स्वयं के उपयोग हेतु खाद्य स्वयं उगा सकें। तत्पश्चात 1904 में फीनिक्स आश्रम की नींव पड़ी, जहाँ गांधी जी के अतिरिक्त मिस्टर वेस्ट, छगनलाल गांधी, गोविंद स्वामी एवं अन्य लोग यहाँ रहने लगे। यह आश्रम स्वयं के श्रम द्वारा अपना भोजन उगाने के विचार पर केंद्रित था। यह भी माना जा सकता है कि गांधी जी के भावी कार्यों की शुरुआत भी यह आश्रम ही था। फीनिक्स आश्रम से ही इंडियन ओपीनियन समाचार पत्र प्रकाशन के विभिन्न कार्य होने लगे और अन्य समय में आश्रमवासी खेती करके स्वयं हेतु खाद्य उगाते थे। हालाँकि गांधी जी लंबे समय तक फीनिक्स में नहीं रहे फिर भी इस आश्रम के पश्चात जब गांधी जी जोहान्सबर्ग में रहने लगे तो उन्होंने अपनी जीवनशैली बहुत साधारण बना ली। वे घर के सारे कार्य स्वयं एवं बालकों के माध्यम से करने लगे, आटा पीसने हेतु वे हाथ की चक्की का उपयोग करते थे तथा साफ-सफाई का कार्य जो पहले केवल नौकर किया करते थे उसमें गांधी जी के बालक नौकरों का हाथ बँटाने लगे। इस प्रकार की जीवनशैली से गांधी जी स्वयं कार्य करने की तरफ अग्रसर हुए और यही गुण उनके बालकों के भीतर भी पनपे।

■ सत्याग्रह हेतु संघर्ष

सत्याग्रह शब्द दो शब्दों से बना है, सत्य और आग्रह, अर्थात् जो सही है उसके लिए तत्पर रहना और असत्य का विरोध करना। दक्षिण अफ्रीका में हिंदुस्तानियों के अधिकारों की लड़ाई लड़ते हुए गांधी जी को महसूस हुआ कि भेदभावों के खिलाफ इस संघर्ष को उन्हें एक नाम देना चाहिए जिससे यह संघर्ष और भी धारदार हो सके। अतः एक उपयुक्त शब्द के लिए गांधी जी ने इंडियन ओपीनियन समाचार पत्र में प्रतियोगिता आयोजित करवाई और मगनलाल गांधी जी के विकास सिंह केमवाल, डॉ मेहरबान सिंह गुसाईं

द्वारा **सदाग्रह** शब्द इस संदर्भ में सुझाया गया, जिसे गांधी जी ने **सत्याग्रह** शब्द में बदल दिया। दरअसल दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को लंबे समय से वहाँ की सरकार के अनुचित कानूनों का सामना करना पड़ रहा था जिसमें प्रथम था तीन पाउंड कर।

दक्षिण अफ्रीका में बसे यूरोपीय अपनी ज़मीनों पर खेती व अन्य कार्य हेतु सस्ते मजदूर चाहते थे, जिनकी पूर्ति हेतु बड़ी संख्या में भारत से एग्रीमेंट पर व्यक्ति दक्षिण अफ्रीका जाते थे, इन्हें ही गिरमिटिया मजदूर कहा जाता था। वे मजदूर जब एग्रीमेंट की अवधि पूरी कर लेते थे, तब उनमें से कई मजदूर वहीं बस गए और ज़मीन लेकर खेती करने लगे, जिस वजह से यूरोपीय लोगों के व्यवसाय पर प्रभाव पड़ने लगा। अतः यूरोपीय लोगों की मांग पर वहाँ की सरकार द्वारा यह कानून लाया गया कि एग्रीमेंट की अवधि के पश्चात वहाँ रहने वाले हर भारतीय पर तीन पाउंड का वार्षिक कर लगाया जाए, जो कि मजदूरों हेतु अधिक था।

इसके अतिरिक्त जो लोग व्यापार हेतु स्वतंत्र रूप से दक्षिण अफ्रीका गए, वे वहाँ की संस्थाओं के सदस्य बनने और वोट करने हेतु राजनीतिक रूप से अधिकृत थे, किंतु 1894 में भारतीयों को मताधिकार से वंचित करने का बिल वहाँ की धारासभा, संसद में लाया गया। इन सभी फैसलों का विरोध करने हेतु वहाँ निवास करने वाले भारतीयों ने एक कमेटी का गठन किया और गांधी जी के सुझाव पर उसका नाम '**नेटाल इंडियन कांग्रेस**' रखा।

वर्ष 1906 में ट्रान्सवाल सरकार द्वारा एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट लाया गया, जो ट्रान्सवाल स्टेट में रहने वाले भारतीयों के लिए चलती-फिरती कैद के समान था। आठ वर्ष से ऊपर के सभी पुरुषों और महिलाओं को परमिट लेना तथा कभी भी मांगे जाने पर वह परमिट दिखलाना इस एक्ट का मुख्य प्रावधान था। परमिट न दिखलाने पर कड़ी सजा का भी प्रावधान था, जिसमें देश निकाला भी एक सजा थी।

इसके विरोध हेतु सितंबर 1906 में स्थानीय संस्था ट्रान्सवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन ने सभा आयोजित की और गांधी जी को भी सभा में आमंत्रित किया। इसी सभा में एक्ट का विरोध करने हेतु यह रणनीति बनाई गई कि सभी भारतवासी एक्ट के विरोध में परमिट नहीं लेंगे और सत्य व अहिंसा का सहारा लेंगे। गांधी जी ने इस खूनी कानून के बारे में 'इंडियन ओपीनियन' में लिखा, स्थानीय सरकार से मुलाकात की, किंतु सकारात्मक परिणाम नहीं मिले। इसी कानून के विरोध हेतु आंदोलन को गांधी जी द्वारा सत्याग्रह नाम दिया गया।

सत्याग्रह की इसी कड़ी में गांधी जी ट्रान्सवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की ओर से प्रतिनिधि मंडल में प्रवेश गए। वर्ष 1907 में जब एक्ट प्रभाव में आया तो एसोसिएशन द्वारा यह तय किया गया कि परमिट के दफ्तरों के सामने धरना दिया जाएगा और परमिट लेने आने वाले सभी हिंदुस्तानियों को उसके नुकसानों से अवगत करवाया जाएगा। जब अनेक हिंदुस्तानियों ने परमिट नहीं लिए तो ट्रान्सवाल सरकार उन्हें गिरफ्तार करने लगी। गांधी जी को भी इसके तहत दो माह की जेल की सजा सुनाई गई। बाद में वार्ताओं के पश्चात गांधी जी व अन्य सत्याग्रहियों को जेल से मुक्त किया गया।



कर दिया गया जब अनेक वार्ताओं के बाद एक्ट के प्रावधानों में छूट दी गई तो तत्पश्चात सत्याग्रहियों और सरकार के मध्य समझौतों के बाद गांधी जी भी परमिट बनाने पर सहमत हो गए। बाद में सरकार के समझौतों के वायदों से मुकरने पर सत्याग्रह पुनः शुरू हुआ।

1993 में दक्षिण अफ्रीका सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय ने , कि दक्षिण अफ्रीका कानून के अनुसार केवल ईसाई धर्म के अनुसार हुए विवाह ही कानूनी माने जाएंगे, ने भी सत्याग्रहियों को आंदोलन तेज करने पर मजबूर किया। अनेक आंदोलनों और सत्याग्रह के पश्चात 1914 में सरकार द्वारा कमीशन गठित करने और काले कानूनों को वापस लेने के पश्चात ही यह सत्याग्रह समाप्त हुआ।

▪ टॉलस्टॉय आश्रम

1910 तक , जब एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट व इमिग्रेंट्स रजिस्ट्रेशन एक्ट के विरोध में सत्याग्रह अपने चरम पर था, उस समय तक गांधी जी एवं अन्य कुछ सत्याग्रहियों का परिवार फीनिक्स आश्रम में रह रहा था। ट्रान्सवाल स्टेट में सत्याग्रह चलने पर सत्याग्रहियों को अक्सर जेल में बंद किया जाने लगा। इससे गांधी जी को जोहान्सबर्ग से 300 मील दूर स्थित फीनिक्स आश्रम के निवासियों की फिक्र होने लगी। साथ ही सत्याग्रहियों को अत्यधिक समय एवं धन फीनिक्स आश्रम से ट्रान्सवाल स्टेट के जोहान्सबर्ग तक आने-जाने में खर्च होता था।

अतः सत्याग्रह के दौरान यह तय किया गया कि सत्याग्रहियों के परिवारों को रखने हेतु ट्रान्सवाल में ही कोई स्थान बनाया जाए। गांधी जी के सहयोगी श्री केलनबैक ने इस उद्देश्य हेतु 1100 एकड़ की जमीन खरीदकर सत्याग्रहियों को भेंट की। यह स्थल जोहान्सबर्ग से मात्र 21 मील दूर था। यही स्थल गांधी जी के टॉलस्टॉय आश्रम का आधार बना।

आश्रम मुख्य रूप से सत्याग्रहियों एवं उनके परिवार को रहने के लिए बनाया गया था, किंतु आश्रम के सदस्यों के लिए गांधी जी ने अनेक नियम भी बनाए, जिनसे आश्रमवासी सादा जीवन, स्वावलंबन की दिशा में भी अग्रसर हुए। आश्रम में हिंदू, मुस्लिम, पारसी और ईसाई धर्म के अनेक लोग थे, जो अलग-अलग प्रांतों से थे। गांधी जी के आग्रह पर आश्रमवासियों ने शाकाहारी भोजन पद्धति अपनाई एवं अपनी आवश्यकता हेतु संसाधन स्वयं जुटाना भी प्रारंभ किया। यह आश्रम रहने के साथ-साथ अनेक शिक्षाओं के प्रसार का भी माध्यम बना।

▪ कोचरब आश्रम

भारत आगमन के पश्चात गांधी जी ने सर्वप्रथम देश भर का भ्रमण किया। तत्पश्चात अहमदाबाद के कोचरब नामक स्थान पर गांधी जी को आश्रम हेतु उपयुक्त स्थान प्राप्त हुआ। इस आश्रम का नाम सत्याग्रह आश्रम रखा गया। इस आश्रम में गांधी जी के परिवार के साथ-साथ अन्य 20-22 लोग भी आश्रम में रहते थे, जिनमें तेरह तमिल थे।



प्रारंभ में तो कोई भी अंत्यज व्यक्ति आश्रम में नहीं था, किंतु कुछ समय पश्चात ही गांधी जी के समक्ष परीक्षा की घड़ी तब आई जब अमृतलाल ठक्कर जी ने एक गरीब अंत्यज परिवार के आश्रम में रहने की सिफारिश की। दूदाभाई नामक अंत्यज व्यक्ति के सपरिवार आश्रम में आने के पश्चात अनेक लोगों ने आश्रम के जीवन प्रणाली में विघ्न शुरू कर दिए। किंतु गांधी जी के सत्य, अहिंसा व प्रेम के राह पर चलने के निश्चय के सम्मुख यह परीक्षा भी क्षणिक साबित हुई। ऐसी ही अनेक घटनाओं ने मिलकर गांधी जी को भारत में छुआछूत खत्म करने के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ाया और 1917 में कोचरब में प्लेग फैलने के कारण गांधी जी ने इस आश्रम को बंद करना उचित समझा। इस प्रकार वर्ष 1915 से 1917 तक यह स्थल गांधी जी की कर्मस्थली बना रहा।

▪ साबरमती आश्रम

कोचरब के बाद यह गांधी जी का दूसरा आश्रम बना। श्री पूंजाभाई हीराचंद, जो गांधी जी के आश्रमों से निरंतर जुड़े रहे, के द्वारा ही गांधी जी को अहमदाबाद में साबरमती के किनारे आश्रम हेतु भूमि उपलब्ध करवाई गई। यह भूमि जेल के पास थी और गांधी जी का मानना था कि आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए कई बार जेल जाना पड़ सकता है, अतः यह जगह उन्हें पसंद आई।

अन्य आश्रमों की तरह यह आश्रम भी सादगी, अनुशासन और बंधुत्व प्रेम पर आधारित था। आश्रमवासी सभी कार्य स्वयं किया करते थे और एक ही रसोईघर में खाना खाते थे। साबरमती आश्रम से ही गांधी जी ने अनेक महत्वपूर्ण आंदोलनों को दिशा दी और अनेक रचनात्मक कार्यक्रमों को भी चलाया।

खादी बुनने के रूप में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना हो या फिर दलितों के उद्धार हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन, इस आश्रम की गांधी जी के कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह आश्रम स्वतंत्रता सेनानियों और विभिन्न समाजसेवियों के लिए प्रयोगशाला केंद्र के रूप में रहा, जहाँ गांधी जी तथा सहयोगी समाजसेवा हेतु विभिन्न कार्यक्रमों को पहले आश्रम में रूपरेखा निर्माण और लागू करते थे तत्पश्चात देश के अन्य हिस्सों में ये कार्यक्रम चलाए जाते थे।

सभी आश्रमवासियों को ग्यारह व्रतों का पालन करना अनिवार्य था। ये ग्यारह नियम थे- सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अस्वाद, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, शरीर श्रम, सर्व धर्म समभाव एवं स्वदेशी। इन व्रतों से ही संकेत होता है कि आश्रमवासी सादगी एवं अनुशासित जीवन जीते थे।

▪ विभिन्न आंदोलनों में सत्याग्रह नेतृत्व

गांधी जी के भारत आगमन के पश्चात 1917-18 के बीच हुए चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलनों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को नई दिशा दी। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के सत्याग्रह की सफलता के बाद भारत में भी उन्हें कुछ प्रसिद्धि प्राप्त हो चुकी थी।

बिहार के चंपारण निवासी किसानों को सरकार द्वारा थोपी तिनकठिया प्रथा से निकलने के लिए किसी नेतृत्वकर्ता की तलाश थी और गांधी जी जहाँ भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर अपनी नज़र बनाए हुए थे, चंपारण के एक किसान राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर गांधी जी अप्रैल 1917 में चंपारण पहुँचे और किसानों की समस्याओं को समझा। सरकार के विरोध के बावजूद वे वहाँ डटे रहे, मजबूरन सरकार को एक समिति बनानी पड़ी और तिनकठिया प्रथा समाप्त हुई। इस आंदोलन ने गांधी जी को व्यापक लोकप्रियता प्रदान की।

वर्ष 1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में फसल खराब होने के कारण किसान लगान देने की स्थिति में नहीं थे, किंतु सरकार लगान वसूलने पर ज़ोर दे रही थी। गांधी जी ने किसानों के साथ मिलकर सत्याग्रह का प्रयोग किया और सरकार को किसानों को लगान में रियायत देने पर मजबूर किया।

इसके पश्चात अहमदाबाद में मिल मजदूरों और मिल मालिकों के परस्पर विवाद को सुलझाने में भी गांधी जी की अतुलनीय भूमिका रही। ऐसा नहीं था कि ऐसे आंदोलन भारत में पहली बार हो रहे थे। किसानों, मजदूरों, आदिवासियों के अन्य आंदोलन इससे पूर्व भी हुए, किंतु गांधी जी ने सत्याग्रह का जो अस्त्र आंदोलनों में प्रयोग करना प्रारंभ किया, वह कई मायनों में नवीन और रचनात्मक रहा।

बाद के आंदोलनों में तो जनता और विभिन्न नेताओं के गांधी जी के सत्याग्रह पर आस्था के परिणामस्वरूप देशव्यापी आंदोलनों, जैसे असहयोग आंदोलन 1920, सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930, व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन 1940, भारत छोड़ो आंदोलन 1942 आंदोलनों में गांधी जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

■ खादी एवं अन्य ग्रामोद्योगों को पुनर्जीवन

भारत आगमन एवं आंदोलनों में प्रतिभाग के पश्चात गांधी जी समझ चुके थे कि केवल राजनीतिक लड़ाई लड़कर ही अंग्रेजों को भारत से खदेड़ा नहीं जा सकता, वरन् यह लड़ाई आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्तरों पर लड़ने की भी आवश्यकता है।

बीसवीं सदी के पूर्वार्ध तक भारत ब्रिटेन के उद्योगों हेतु कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता तथा ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उपभोक्ता बन चुका था। इस वजह से यहाँ के प्राचीन ग्रामोद्योग नष्ट हो चुके थे, जिससे खेती पर अत्यधिक दबाव पड़ा। गांधी जी का लक्ष्य था कि वे ऐसे उद्योगों को देश भर में पुनः खड़ा करें जिनसे गरीब जनता को रोजगार भी प्राप्त हो सके और ब्रिटेन के सामान की आपूर्ति भी कम हो।

असहयोग आंदोलन के समय उन्होंने स्वदेशी नामक कार्यक्रम चलाया और विदेशी कपड़ों का बहिष्कार भी किया। असहयोग आंदोलन के दौरान चौरी-चौरा की भीषण हिंसा के बाद गांधी जी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। वर्ष 1924 में जेल से रिहा होने के बाद वे कुछ वर्षों के लिए मुख्य राजनीति से थोड़े हट गए और देश भर में भ्रमण किया।

यह समय गांधी जी का ग्रामोद्योगों को एक नई दिशा देने और जनता से गहन संबंध बनाने का समय था। गांधी जी जहाँ भी जाते चरखे के महत्व पर भाषण अवश्य देते थे। वर्ष 1925 में ही अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना हुई। इस संस्था ने अनेक ग्रामीणों को रोजगार के अवसर प्रदान किए। 3,500 गाँवों में संघ की संस्थाएँ थीं और लगभग दो लाख साठ हजार लोगों को इस संघ के माध्यम से रोजी-रोटी प्राप्त हुई।

वर्ष 1934 तक सविनय अवज्ञा के स्थगन के पश्चात गांधी जी ने कांग्रेस की सदस्यता त्याग दी और पूर्ण रूप से ग्रामोद्धार की तरफ ध्यान देने लगे। गांधी जी वर्धा के निकट सेगांव नामक स्थान पर रहने लगे, जो बाद में सेवाग्राम के नाम से प्रसिद्ध हुआ और गांधी जी के ग्राम कल्याण संबंधी विभिन्न योजनाओं का केंद्र बनने लगा।

▪ अस्पृश्यता निवारण एवं समानता हेतु कार्य

भारत में स्वतंत्रता का संघर्ष गांधी जी के लिए न केवल राजनीतिक संघर्ष था बल्कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संघर्ष भी था। इस समय तक देश भर में अनेक कुरीतियाँ प्रचलित थीं। जातिवादी व्यवस्था के कारण निम्न वर्ग के लोगों के साथ हीन व्यवहार किया जाता था। गांधी जी चाहते थे कि स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान देश की जनता आत्मिक जागरण का कार्य भी करे और इतनी निर्मल हो कि परतंत्रता टिक ही न सके। बिना समानता के ऐसा होना संभव ही न था।

गांधीजी चाहते थे कि समाज में जाति-पंथ के आधार पर बिल्कुल भेदभाव न हो, सभी मिलजुलकर रहें। महात्मा गांधी न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थे, वरन् एक चिंतक होने के नाते उनके विचारों ने समाज सुधारों को भी दिशा प्रदान की। समाज के वंचित वर्गों को मुख्य धारा में जोड़ने के लिए उन्होंने कई कार्यक्रम चलाए, जो उनके विभिन्न अनुयायियों ने जारी रखे।

▪ उपसंहार

गांधी जी के सर्वोदय दर्शन का मूल उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास एवं कल्याण सुनिश्चित करना था। यह विचार मनुष्य के राजनीतिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक विकास को महत्व देता है। गांधी जी एक ऐसी व्यवस्था बनाना चाहते थे जिसमें आर्थिक संसाधनों का केंद्रीकरण न हो, वरन् संपत्तिधारी ट्रस्टीशिप के माध्यम से संपत्तियों को समाज के सभी व्यक्तियों के विकास एवं कल्याण में प्रयोग करें। ऐसा होने से आर्थिक उन्नति के साथ-साथ समाज के सभी व्यक्तियों की नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होगी, ऐसा गांधी जी का मानना था।



महात्मा गांधी सत्य के ऐसे सिपाही थे जो जाति, धर्म, देश से उठकर विश्वबंधुत्व की बात करते थे। वर्तमान समय में भौतिकतावाद एवं हथियारों की अंधी दौड़ के बीच गांधी जी के सर्वोदय विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सूची

1. Thomos, M.(1993). Gandhi and His Ashrams. Popular publication Mumbai
2. गांधी, महात्मा. 1946). रचनात्मक कार्यक्रम,उनका रहस्य और स्थान . नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद
3. नंदा, बी आर. महात्मा गांधी : एक जीवनी. सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन
4. कृपलानी. कृष्ण, (1997) गांधी एक जीवनी , नैशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली
5. गांधी, मो०क०. (2014) 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद.
6. झा, राकेश कुमार(1995) 'गांधीय चिंतन में सर्वोदय पोईन्टर पब्लिशर्स, जयपुर.
7. विजय, श्रीचन्द(1985). महात्मा गांधी का धर्म दर्शन जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली.
8. प्रधान, बेनुधर (1980). द सोशियलिस्ट थॉट ऑफ महात्मा गांधी, जी०डी० के० पब्लिकेशन्स, दिल्ली.
9. जौली, सुरजीत कौर(2007). गांधी एक अध्ययन, कन्सैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली.
- 10.रथनाम चेट्टी, के०एम०. (1991).'सर्वोदय एण्ड फ्रीडम ए गांधीयन एप्रेजल', डिस्कवरी पब्लिकेशन्स हाऊस, नई दिल्ली.
- 11.गांधी, एम०के०. (1978) 'गीता की महिमा, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली
- 12.वर्मा, वी०पी०.(1980). दि. पालिटिकल फिलासफी ऑफ महात्मा गांधी एण्ड सर्वोदय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा
- 13.शर्मा, बी०एम०, रामकृष्ण दत्त शर्मा, सविता शर्मा (2005). 'भारतीय राजनीतिक विचारक', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
- 14.गांधी, महात्मा:(2014). सर्वोदय जॉन रस्किन के सिद्धान्तों पर आधारित, मैपल प्रेस, नोएडा.